

भुशुंडि रामायण

दो.- नाथ कृतारथ भयउँ मैं तव दरसन खगराज ।

आयसु देहु सो करौँ अब प्रभु आयहु केहि काज ॥

सदा कृतारथ रूप तुम्ह कह मृदु बचन खगेस ।

जेहि कै अस्तुति सादर निज मुख कीन्हि महेस ॥

सुनहु तात जेहि कारन आयउँ । सो सब भयउ दरस तव पायउँ ॥

देखि परम पावन तव आश्रम । गयउ मोह संसय नाना भ्रम ॥

अब श्रीराम कथा अति पावनि । सदा सुखद दुख पुंज नसावनि ॥

सादर तात सुनावहु मोही । बार बार बिनवउँ प्रभु तोही ॥

सुनत गरुड़ कै गिरा बिनीता । सरल सुप्रेम सुखद सुपुनीता ॥

भयउ तासु मन परम उछाहा । लाग कहै रघुपति गुन गाहा ॥

प्रथमहिँ अति अनुराग भवानी । रामचरित सर कहेसि बखानी ॥

पुनि नारद कर मोह अपारा । कहेसि बहुरि रावन अवतारा ॥

प्रभु अवतार कथा पुनि गाई । तब सिसु चरित कहेसि मन लाई ॥

दो.- बालचरित कहि बिबिध बिधि मन महँ परम उछाह ।

रिषि आगवन कहेसि पुनि श्रीरघुबीर बिबाह ॥

बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा । पुनि नृप बचन राज रस भंगा ॥

पुरबासिन्ह कर बिरह बिषादा । कहेसि राम लछिमन संबादा ॥

बिपिन गवन केवट अनुरागा । सुरसरि उतरि निवास प्रयागा ॥

बालमीक प्रभु मिलन बखाना । चित्रकूट जिमि बसे भगवाना ॥

सचिवागवन नगर नृप मरना । भरतागवन प्रेम बहु बरना ॥

करि नृप क्रिया संग पुरबासी । भरत गए जहँ प्रभु सुख रासी ॥

पुनि रघुपति बहुबिधि समुझाए । लै पादुका अवधपुर आए ॥

भरत रहनि सुरपति सुत करनी । प्रभु अरु अत्रि भेंट पुनि बरनी ॥

दो.- कहि बिराध बध जेहि बिधि देह तजी सरभंग ।

बरनि सुतीछन प्रीति पुनि प्रभु अगस्ति सतसंग ॥

कहि दंडक बन पावनताई । गीध मइत्री पुनि तेहिं गाई ॥

पुनि प्रभु पंचबटीं कृत बासा । भंजी सकल मुनिन्ह की त्रासा ॥

पुनि लछिमन उपदेस अनूपा । सूपनखा जिमि कीन्हि कुरूपा ॥

खर दूषन बध बहुरि बखाना । जिमि सब मरमु दसानन जाना ॥

दसकंधर मारीच बतकही । जेहि बिधि भई सो सब तेहिं कही ॥

पुनि माया सीता कर हरना । श्रीरघुबीर बिरह कछु बरना ॥

पुनि प्रभु गीध क्रि या जिमि कीन्ही । बधि कबधं सबरिहि गति दीन्ही ॥

बहुरि बिरह बरनत रघुबीरा । जेहि बिधि गए सरोबर तीरा ॥

दो.- प्रभु नारद संबाद कहि मारुति मिलन प्रसंग ।

पुनि सुग्रीव मिताई बालि प्रान कर भंग ॥

कपिहि तिलक करि प्रभु कृत सैल प्रबरषन बास ।

बरनन बर्षा सरद अरु राम रोष कपि त्रास ॥

जेहि बिधि कपिपति कीस पठाए । सीता खोज सकल दिसि धाए ॥

बिबर प्रबेस कीन्ह जेहि भाँती । कपिन्ह बहोरि मिला संपाती ॥

सुनि सब कथा समीरकुमारा । नाघत भयउ पयोधि अपारा ॥

लंका कपि प्रबेस जिमि कीन्हा । पुनि सीतहि धीरजु जिमि दीन्हा ॥

बन उजारि रावनहि प्रबोधी । पुर दहि नाघेउ बुरि पयोधी ॥

आए कपि सब जहाँ रघुराई । बैदेही की कुसल सुनाई ॥
सेन समेति जथा रघुबीरा । उतरे जाइ बारिनिधि तीरा ॥
मिला बिभीषन जेहि बिधि आई । सागर निग्रह कथा सुनाई ॥
दो.- सेतु बाँधि कपि सेन जिमि उतरी सागर पार ।
गयऊ बसीठी बीरबर जेहि बिधि बालिकुमार ॥
निसिचर कीस लराई बरनिसि बिबिध प्रकार ।
कुंभकरन घननाद कर बल पौरुष संघार ॥
निसिचर निकर मरन बिधि नाना । रघुपति रावन समर बखाना ॥
रावन बध मंदोदरि सोका । राज बिभीषन देव असोका ॥
सीता रघुपति मिलन बहोरी । सुरन्ह कीन्हि अस्तुति कर जोरी ॥
पुनि पुष्पक चढ़ि कपिन्ह समेता । अवध चले प्रभु कृपा निकेता ॥
जेहि बिधि राम नगर निज आए । बायस बिसद चरित सब गाए ॥
कहेसि बहोरि राम अभिषेका । पुर बरनत नृपनीति अनेका ॥
कथा समस्त भुशुंड बखानी । जो मैं तुम्ह सन कही भवानी ॥
सुनि सब राम कथा खगनाहा । कहत बचन मन परम उछाहा ॥
सो.- गयउ मोर संदेह सुनेउँ सकल रघुपति चरित ।
भयउ राम पद नेह तव प्रसाद बायस तिलक ॥